प्रोटीनयुक्त सब्जी–लोबिया

डॉ0 ए.सी.यादव
सब्जी विभाग
चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय
हिसार–125004

सब्जियों में लोबिया की फली का मनुष्य के भोजन में विशेष महत्त्व है। लोबिया में प्रोटीन की मात्रा अधिक पाई जाती है। लोबिया की काश्त बड़ी आसानी से की जा सकती है लेकिन इसकी फलियाँ जल्दी खराब हो जाने के कारण इन्हें हर बाजार में नहीं भेजा जा सकता है।

प्रमुख किस्में

पूसा बरसाती : यह किस्म वर्षाकालीन बिजाई के लिए उपयुक्त है। इसकी फलियाँ लम्बी व सफेद–हरे रंग की होती है। इस किस्म की फलियाँ 55–60 दिनों में तैयार हो जाती है। औसत पैदावार 16–18 क्विंटल प्रति एकड़ है।

पूसा दो फसली : यह किस्म दोनों मौसमों (वर्षा व ग्रीष्म ऋतु) के लिए उपयुक्त है। इस किस्म की फलियाँ हरे रंग की, नर्म व मोटी होती है। इसकी औसत पैदावार 12–16 क्विंटल प्रति एकड़ है।

पूसा कोमल : इस किस्म के पौधे झाड़ीनुमे हैं। इसकी फलियों की पहली तुड़ाई 45 दिन बाद हो जाती है। इस किस्म को बरसात तथा बसंत दोनो मौसमों में सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है। इसकी फलियों को दो से तीन बार तोड़ा जाता है। फलियाँ हरे रंग की 25–30 सैं.मी. लम्बी होती हैं। इसकी औसत पैदावार 40 क्विंटल प्रति एकड़ है।

भूमि एवं जलवायु

लोबिया की फसल लगभग सभी प्रकार की जमीन में ली जा सकती है। नमक के प्रति यह बहुत संवेदनशील है। इसलिए लवणीय व क्षारीय जमीन में इसकी काश्त नहीं करनी चाहिए। लोबिया के लिए गर्म जलवायु की जरूरत है। फसल की बढ़वार व अच्छी पैदावार के लिए 21–35^{0} सैं0 सबसे उपयुक्त तापमान है। भारी बारिश और जिन जमीनों में ज्यादा समय तक पानी खड़ा रहता है इसकी काश्त के लिए उपयुक्त नहीं है।

बिजाई का समय एवं बीज की मात्रा

हरियाणा में लोबिया की फसल एक वर्ष में दो बार ली जाती है। ग्रीष्मकालीन फसल के लिए फरवरी–मार्च माह में तथा वर्षाकालीन फसल के लिए इसकी बिजाई जून–जुलाई में की जाती है। बिजाई से पहले खेत में 2–3 बार जुताई करके और फिर सुहागा लगाकर लाइनों में 30–45 सैं.मी. और पौधे से पौधे की दूरी 15–20 सैं.मी. रखते हैं। एक एकड़ की बिजाई के लिए लगभग 8–10 किलोग्राम बीज की आवश्यकता होती है।

खाद व उर्वरक

लोबिया एक दलहनी फसल है इसलिए इसको ज्यादा मात्रा में खाद की आवश्यकता नहीं होती है। यदि लोबिया पहली बार खेत में लगाया जा रहा है तो बीज का बिजाई से पहले राइजोबियम से उपचार करना चाहिए। इससे जड़ों में नाइट्रोजन को बढ़ाने वाली गांठों की संख्या बढ़ेगी और जमीन में नाइट्रोजन का स्तर बढ़ेगा। एक एकड़ से अच्छी पैदावार लेने के लिए 4–6 टन गोबर की खाद, 10 किलोग्राम नाइट्रोजन तथा 16 किलोग्राम फास्फोरस की आवश्यकता होती है।

सिंचाई एवं निराई–गोडाई

लोबिया की जड़ें ज्यादा गहराई तक नहीं जाती। इसलिए इसकी सिंचाई हल्की करनी चाहिए। आमतौर पर इसकी बिजाई के बाद दो या तीन सिंचाइयों की आवश्यकता होती है। पहली सिंचाई फूल आने से पहले करनी चाहिए जिससे की अच्छी संख्या में फलियां लगे और दूसरी सिंचाई फलियों के लगने के बाद करनी चाहिए। तीसरी सिंचाई भी पहली फलियों की तुड़ाई के बाद की जा सकती है जिससे की आगे और नई फलियों का फुटाव हो। एक महीने की फसल को एक बार गोडाई करनी चाहिए जिससे खरपतवार नष्ट हो जाएं और जड़ों को ठीक से हवा मिला सके।

फलियों की तुड़ाई

कच्ची फलियों को ही तोड़ना चाहिए। थोड़ा सा भी फलियों में रेशा पड़ने के बाद वे बाजार में बिकने लायक नहीं रहेंगी। 45 दिन की फसल में फलियों की पहली तुड़ाई की जा सकती है। उसके बाद हर दो दिन बाद फलियों की तुड़ाई करनी चाहिए।